

## भक्तिकाल में रामस्नेही संप्रदाय

बबिता कुमावत

सहायक आचार्य, हिंदी, सेठ नंदकिशोर पटवारी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नीमकाथाना, सीकर

### सारांश :-

रामस्नेही संप्रदाय स्वामी रामचरण जी द्वारा स्थापित एक महत्वपूर्ण संप्रदाय है, इन्होंने सामाजिक कुरीतियों व आडंबरों का विरोध किया, यह संप्रदाय निर्गुण राम की भक्ति पर जोर देता है। निर्गुण राम का अर्थ है वह राम जो लौकिक गुणों और भक्ति से परे हो। इस संप्रदाय की चार मुख्य शाखाएं हैं – शाहपुरा, रेण, खेड़ापा और सिंहथल। इस संप्रदाय ने विभिन्न धर्मों में समन्वय स्थापित किया, ये किसी प्रकार की जाति पंक्ति में विश्वास नहीं करते हैं मानवीय मूल्यों से संपन्न यह धर्म रामस्नेही संप्रदाय कहलाया इन संतों ने अपनी वाणी को लोक भाषा के माध्यम से जनता तक पहुंचाया। शाहपुरा शाखा के प्रवर्तक स्वामी रामचरण जी महाराज थे, उन्होंने कठोर साधना की थी और राम शब्द को ही उन्होंने हिंदू मुस्लिम समन्वय की भावना का प्रतीक बताया उन्होंने कहा था की गृहस्थी व्यक्ति भी बिना किसी प्रकार का कपट मन में रखे साधना कर सकता है और मोक्ष प्राप्त कर सकता है। जब समाज अन्याय, भ्रष्टाचार, बेईमानी इनकी तरफ बढ़ रहा है तब रामस्नेही संप्रदाय के संतों के विचार ही बाहर निकाल सकते हैं।

**बीज शब्द:-** अलौकिक, रहस्यवाद, आडंबरवाद, अवांछित, एकेश्वरवाद, कर्मकांड, गृहस्थी।

### मूल आलेख

रामस्नेही संप्रदाय के संतों का भक्ति काल में विशेष योगदान रहा है, जब भारत पर मुसलमानों के आक्रमण हो रहे थे उस समय रामस्नेही संप्रदाय के संतो ने ही लोगों को उस संकट से बाहर निकाला क्योंकि संतों की वाणी ही ऐसी स्थितियों से उबार सकती है। इस संप्रदाय के संतों का मानना है की स्नान, माला, जप, उपवास रखने से ब्रह्म को प्राप्त नहीं किया जा सकता, राम नाम के प्रति आस्था रखनी चाहिए, मूर्ति पूजा के भी यह घोर विरोधी है, सिर्फ राम नाम का स्मरण करने पर जोर देते हैं, जहां भी रामद्वारे बने हुए हैं वहां हर वक्त राम नाम स्मरण चलता रहता है, हर समय भंडारे की व्यवस्था रहती है जो भी भक्त दूर दूर से आते हैं वो वहां प्रसाद के रूप में भोजन ग्रहण करते हैं। नशा करने वाले व्यक्तियों के लिए वहाँ प्रवेश निषेध है।

आज भी रामस्नेही संप्रदाय के भक्त लगभग हर जगह हैं, जोधपुर जिले के खेड़ापा में रामस्नेही संप्रदाय की एक पीठ है उसके अनन्य भक्त रामप्रकाश जी प्रजापत (अध्यापक) बारनी खुर्द ने बताया कि खेड़ापा में रामस्नेही संप्रदाय के संतों ने गौशाला स्थापित की है, गायों की निरंतर सेवा करते हैं और अपनी वाणी के माध्यम से गायों की सेवा का उपदेश देते हैं। आसपास में छोटे छोटे गांव हैं, उनके बच्चों के लिए विद्यालय भी खोला हुआ है उस विद्यालय में रामस्नेही भक्त शिक्षक के रूप में अपनी सेवा प्रदान करते हैं। उसी विद्यालय में बारनी खुर्द के राम विलास जी प्रजापत अपनी पत्नी सहित शिक्षक के रूप में सेवा प्रदान करते हैं उन्होंने बताया कि यहां बच्चे शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों से भी लाभान्वित होते हैं।

विद्यालय में अच्छे संस्कारों को निर्मित किया जाता है, सुरक्षित व सहायक वातावरण उपलब्ध करवाया जाता है, योग्य व प्रतिबद्ध शिक्षक है, इसके अलावा उत्कृष्ट संसाधन, सुविधाएँ व पाठ्येतर गतिविधियों पर जोर दिया जाता है, अनुशासन का पूर्ण ध्यान रखा जाता है, छात्रों को सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है साथ ही खेलकूद से संबंधित गतिविधियां भी आयोजित करवाई जाती है।

बारनी खुर्द गांव के अनन्य भक्त इस संप्रदाय से जुड़े हुए हैं, इसी गांव के श्री हरलाल जी प्रजापत का नाम आज भी संतों के द्वारा लिया जाता है क्योंकि वे खेड़ापा पीठ के अनन्य भक्त थे। हरलाल जी रामस्नेही संप्रदाय के इतने परम भक्त थे की सत्संग में तल्लीन होकर भजन करते थे व इतने मग्न हो जाया करते थे कि अपने आप को नाचने से नहीं रोक पाते थे। वे “कीर्तनों में नाचने वाले हरलाल बाबा” के नाम से प्रसिद्ध हो गए थे।

रामस्नेही संप्रदाय की ही रेण शाखा के प्रवर्तक दरियाव जी महाराज ने राम भक्ति का अनुपम प्रचार किया उनकी भक्ति पर रहस्यवाद का प्रभाव भी माना जाता है, इन संतों ने लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति पर जोर दिया व अपने भक्तों को अपने उपदेशों के माध्यम से आचरण की पवित्रता की शिक्षा देते हैं। रामस्नेही संप्रदाय की रेण शाखा के अनन्य भक्त गोटेन, नागौर के रहने वाले राम प्रसाद जी व रामकिशोर जी सुथार ने बताया कि रेण पीठ पर हर समय अखंड भंडारे की व्यवस्था रहती है व अपने भक्तों के लिए रहने व खाने पीने की पूरी व्यवस्था रहती है। ये स्वयं भी कई बार रेण पीठ पर प्रसाद के रूप में सवामणी कर चुके हैं जो एक भक्त की अनन्य आस्था का उदाहरण है, रामस्नेही संप्रदाय के अनुयायियों में अपने नियमों को लेकर अगाध श्रद्धा है।

रामस्नेही संप्रदाय के संत गुरु की महता पर बल देते हैं, उनका मानना है कि गुरु के माध्यम से संसार सागर को सहज पार किया जा सकता है, ये किसी भी प्रकार के जाति पाँति में ये विश्वास नहीं करते हैं, सभी धर्मों के समन्वय की बात करते हैं इनका मानना है कि राम नाम स्मरण के लिए किसी जाति या धर्म की आवश्यकता नहीं होती है। समय समय पर साधक संत विभूतियों ने समाज में अध्यात्म ऊर्जा प्रदान कर निश्चेतन अज्ञान हृदयों में परम चेतना प्रदान की है। सृष्टि में परमात्मा अधर्म का नाश कर धर्म की स्थापना करने के लिए अवतार लेते हैं। यह अवतार दो तरह के माने जाते हैं एक में स्वयं परमात्मा एवं दूसरे में अपने अंश से संत महापुरुष के रूप में अवतरित होते हैं।

संत भाषा भी लोक भाषा प्रयोग करते हैं जिससे जनमानस को समझने में आसानी हो सके। आडंबर वाद का रामस्नेही संप्रदाय के संत विरोध करते हैं, इनका मानना है कि आडंबर या दिखावा करने से ब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती है योग व भक्ति के समन्वय पर बल देते हुए एकेश्वरवाद का समर्थन करते हैं, सहज साधना पर भी बल देते हैं, ऊंच नीच व भेदभाव का विरोध करते हैं रामस्नेही संतों ने समाज के शोषकों की भी अच्छी खबर ली है। ये ढोंगी पंडितों, पाखंडी साधुओं और मादक वस्तुओं के सेवन कर्त्ताओं के प्रति समाज को सजग रहने के लिए कहते हैं। स्वामी रामचरण जी ने साधु वेश धारी एवं अवांछित तत्वों का भी वर्णन किया है श्री मुरलीराम जी महाराज, श्री स्वामी रामचरण जी महाराज के द्वादश शिष्यों में से एक प्रमुख शिष्य थे। उन्होंने भी रामस्नेही संप्रदाय के सिद्धांतों का प्रचार किया।

रामस्नेही संतों की बहुदेववाद में आस्था नहीं है, ये एकेश्वरवाद में विश्वास करते हैं, स्वामी रामचरण जी ने भी केवल एक राम की उपासना का उपदेश दिया है। रामस्नेही संप्रदाय का मूल सिद्धांत राम भजन एवं श्री गुरु वाणी का अध्ययन पाकर महापुरुषों ने अपनी समस्त साधना का समस्त रहस्य वाणी रूप में प्रकट किया है। रामदास जी महाराज के अनगिनत शिष्य हुए जिन्होंने इस राम धाम का निर्माण किया, परमार्थ और सेवा का संदेश प्रथम आचार्य श्री के समय से ही खेड़ापा धाम में दृष्टिगोचर होता है राम धाम खेड़ापा की विशेषता यह है कि किसी भी समय आए हुए संतों व भक्तों के लिए अन्न, जल एवं आवास की व्यवस्था उपलब्ध रहती है। इस बात की विशेषता दर्शाते हुए किन्हीं संतों ने धाम की महिमा में निम्नलिखित साथियों की रचना की है -

“खेड़ापो कुण जाणतो छोटकियो सो गांव

रामदास जी प्रकट भये चारों खूट में नाम”

खेड़ापा शाखा के प्रवर्तक संत रामदास जी का जन्म भीकमकौर ग्राम जोधपुर में हुआ। सींथल के आदि आचार्य श्री हरिराम दास जी महाराज से दीक्षा प्राप्त की, भजन साधना करते हुए महाराज श्री खेड़ापा स्थित जुनी जागा में पधारे। तत्पश्चात ग्राम ठाकुर पदम सिंह जी राजपुरोहित के आग्रह एवं गुरु आज्ञा प्राप्त कर राम धाम का शिलान्यास किया।

रामस्नेही संप्रदाय के चारों धामों के द्वारा अनेक प्रकार के परमार्थिक प्रकल्प चलाई जा रहे हैं जैसे विद्यालय, आयुर्वेद चिकित्सालय, गौशाला, निशुल्क चिकित्सा शिविर में शिक्षा के क्षेत्र में विशेष कार्य हो रहा है। इस संप्रदाय के भक्तों ने भी गुरु का उपदेश प्राप्त कर रामस्नेही धर्म का प्रचार किया। प्रातः काल नित्य प्रति नियम से संतों की वाणी का पाठ किया जाता है, आचार्य की वार्षिकी वर्षी पूर्व रात्रि में सामूहिक नाम जप, राम भजन कीर्तन व सत्संग कार्यक्रम भी होते हैं, राम धाम खेड़ापा में मंदिर दर्शन के रूप में निम्न स्थान है – जलतरणी पाषाण कुंडी, पुस्तकालय दर्शन, आचार्य महल दर्शन, राम भंडार दर्शन, इंद्रसाल दर्शन इत्यादि

रामस्नेही परंपरा के नियमों में जो नियम है, उनमें मुख्यतः प्रातः काल उठते ही कम से कम एक घंटा राम नाम का जाप करना व प्रतिदिन नियम पूर्वक गुरु चरणामृत लेना, किसी के भी देव पूजा आदि की निंदा नहीं करना यदि कोई करता हो तो वहां से उठकर चल देना चाहिए, इस संप्रदाय के द्वारा जनमानस के हितों के लिए अनेक कार्य किए जाते हैं। इनके द्वारा संचालित संस्थाओं में यदि कोई सेवा देना चाहते हैं तो सेवा प्रदान कर सकते हैं इस पुनीत कार्य के भागीदार बन सकते हैं।

सेवा का सुंदर स्वरूप का उदाहरण रामस्नेही संप्रदाय द्वारा संचालित संस्थाओं में देखा जा सकता है, सभी संस्थाएं वृहत रूप में मानव सेवा के लिए तत्पर रहती हैं। समय-समय पर इनके सत्संग कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जहां अपार जन समूह मौजूद होता है, तत्पश्चात प्रसाद वितरण की व्यवस्था की जाती है। संतों के उपदेशामृतों से संताप, परेशानी, व कष्ट दूर होते हैं महापुरुषों का स्वयं का जीवन भी अत्यंत कष्टमय होता है ये तथ्य उनके जीवन चरित्र से पता लगते हैं।

भारत की पावन वसुंधरा ने समय समय पर राष्ट्र के अलंकार रखों को आविर्भूत किया है। राम नाम की महत्ता का जितना वर्णन किया जाये वह कम है, नाम जप में इतना प्रभाव है कि भगवान स्वयं प्रहरी बनकर नाम जपने वाले भक्तों की रक्षा करते हैं। ये उपदेश देते हुए रामस्नेही संतों ने अनेक स्थानों का भ्रमण किया अपने शिष्य बनाए व राम भक्ति का प्रचार किया व साधु संगति पर विशेष बल दिया। राम नाम के स्मरण को श्रेष्ठ मानते हुए पुनर्जन्म के बंधन से मुक्ति पाने का साधन मानते हैं रामस्नेही संतों का मानना है कि राम नाम के स्मरण के लिए गृहस्थी त्याग करना अनिवार्य नहीं है, कपट रहित होकर राम नाम स्मरण करने से भी मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। इस संप्रदाय को मानने वाले भक्त न केवल राजस्थान में बल्कि राजस्थान से बाहर भी है, राजस्थान से बाहर अन्य राज्यों में रामद्वारे भी हैं जहां राम नाम का उच्चारण किया जाता है।

रामस्नेही संप्रदाय के अनुयायियों के द्वारा भजनों के माध्यम से भगवान राम के प्रति अपनी आस्था प्रकट की जाती है व संतों के द्वारा भक्तों को चेताया जाता है, जैसे :-

“राम नाम की जहाज आपां ने तारेलां

सारा सज्जना मिलकर बैठो, गुरु ज्ञान ने पकड़ो सेठों

सारा सुधारे काज आपां ने तारेलां”।

अपने इस भजन के माध्यम से रामस्नेही संतों के द्वारा अपने भक्तों को यह सीख दी जाती है कि रामस्नेही संप्रदाय के नियमों का पालन कर अच्छे प्राणी बनो -

“बन जाओ राम स्नेही प्राणी

ए गंदी नर देही, बन जाओ रामसनेही प्राणी” ।

रेण शाखा के प्रवर्तक संत दरियाव जी ने गुरु को देवता मानते हुए कहा कि “गुरु भक्ति से ही मोक्ष संभव है भक्ति के समस्त कर्मकांडों की अपेक्षा राम नाम का स्मरण श्रेष्ठ है” ।

संत दरियाव जी ने कभी भी स्त्री जाति की निंदा नहीं की बल्कि उन्होंने तो कहा कि स्त्री जाति विश्व की जननी है तथा विश्व का पालन पोषण करने वाली है उसका सम्मान करना चाहिए । रामस्नेही संप्रदाय धार्मिक व सामाजिक एकता को बढ़ावा देता है समाज में शिक्षा व स्वास्थ्य पर जोर देता है रामस्नेही संप्रदाय को मानने वाले अनुयायी लगभग सभी गांवों में है ।

उनका मानना है कि ईश्वर सर्वव्यापी है व भक्तों को ईश्वर के प्रति प्रेम व भक्ति की भावना रखनी चाहिए इस संप्रदाय के संतों के द्वारा अपने भक्तों को नशे व बुरी लत से दूर रहने की सलाह दी जाती है व समाज में समरसता और सौहार्द को बढ़ावा दिया जाता है, रामजी महाराज सर्वव्यापक है पापों को नष्ट करने वाले है । दयालू है, करुणा के सागर है, संसार को बनाने वाले नौका के समान, सज्जन पुरुष व सभी में जो प्रसिद्ध है, वेद इनका रहस्य है जिसको इनका रहस्य मालूम नहीं है । इस तरह के सामाजिक सुधार व सौहार्द के उपदेश दिए जाते हैं ।

इसका एक बड़ा उदाहरण होली के अवसर पर किए जाने वाले आयोजन में देखने को मिलता है, उस दिन सभी भक्त मुख्य पीठ पर एकत्र होते हैं व विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है । इस संप्रदाय को मानने वाले भक्तों में सौहार्द की अतिशयता के उदाहरण और भी देखने को मिलते हैं जैसे - मुख्य पीठ पर राम-राम का उच्चारण किया जाता है तो प्रत्येक गांव में रामस्नेही संप्रदाय के अनुयाई बारी बारी से राम नाम के उच्चारण के लिए वहां उपस्थित होते हैं । इस संप्रदाय के अनुयाई सादगी व सरलता को अपनाते हैं इसी तरह रामनवमी को भी आयोजन रखा जाता है जो भगवान राम के जन्मदिन के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है, दीपावली का त्योहार भी बड़े जोर शोर से मनाया जाता है धार्मिक एकता के साथ-साथ सामाजिक एकता भी इस संप्रदाय के अनुयायियों में मिलती है । नैतिक मूल्यों जैसे – करुणा, दया, सहानुभूति की भावना को बढ़ावा देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है, यह संप्रदाय अपने भक्तों को सामाजिक जिम्मेदारी निभाने की बात भी करता है और समाज के लिए अच्छे कार्य करने की सीख भी देता है जो की आत्मज्ञान व आत्मविकास के लिए अति आवश्यक है । गुरु के प्रति सम्मान की भावना भी रखनी चाहिए, यह संप्रदाय नैतिक व सामाजिक, मानवीय मूल्यों पर जोर देता है व इस संप्रदाय के सभी अनुयायी उनकी शिक्षाओं का पालन करते हैं, उनकी शिक्षाएं व सिद्धांत सर्वव्यापी हैं एक मानव होने के नाते हम सभी को उनकी शिक्षाओं पर चलना चाहिए व ऐसे नियमों को अपनाना चाहिए ।

#### निष्कर्ष :-

रामस्नेही संत काव्य परंपरा में कई ऐसे संत कवि हुए जिन्होंने अपनी ज्ञानवर्धक वाणी से भक्ति भावना को समाज के सभी वर्गों तक पहुंचाया और सामाजिक एकता, नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया । शास्त्रीय जटिलता की अपेक्षा सहज भाव पक्ष पर बल दिया, जिससे सामाजिक सुधार हुए इस संप्रदाय का प्रत्यक्ष सुधारात्मक प्रभाव इनके अनुयायियों में देखने को मिलता है । संत काव्य की सादगी और संप्रेषण क्षमता एक साहित्यिक मूल्य के रूप में उभरी जिससे जनसाधारण को सत्य का बोध हुआ रामस्नेही संत काव्य परंपरा ने भारतीय समाज और साहित्य पर गहरी छाप छोड़ी इन्होंने न सिर्फ आध्यात्मिक चेतना बल्कि सामाजिक चेतना को भी जाग्रत किया । इस संप्रदाय के संतों ने अपनी वाणियों के माध्यम से आशा की ज्योति बिखरने का काम किया है क्योंकि सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध भी संत कवियों ने अपनी आवाज बुलंद की है, मानवतावादी समाज की स्थापना के लिए हमेशा से प्रयत्नशील रहे हैं उनके मुख से जो भी शब्द निकले वे सहज काव्य रूप में प्रकट हुए ।

**संदर्भ ग्रंथ :-**

1. रामसनेही संत कवि दयाल दास और उनका काव्य : डॉक्टर गोपी किशन सितारा, 2006 प्रकाशक, लकी प्रिंटर्स गोटेन, नागौर
2. राम धाम दिव्य दर्शन : श्री गोविंद राम जी शास्त्री, साधुरामचंद्र रामसनेही 2021 प्रकाशक, नव प्रभा प्रिंटर्स
3. भारतीय संस्कृति एवं शाहपुरा रामस्नेही संत : डॉ रामस्वरूप रामस्नेही 2020
4. रामस्नेही संप्रदाय की दिव्य विभूतियाँ : डा. केशव पथिक 2006 प्रकाशक, श्री रामविलास धाम ट्रस्ट, शाहपुरा (भीलवाडा)
5. श्री उदासीराम जी वाणी एवं श्री रामलगन जी वाणी : श्री रामस्नेही संदेश, ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल 2011 प्रकाशक, रुचिका प्रिन्टर्स जयपुर
6. स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु जीवन दर्शनांक - डा. केशव पथिक 2007, प्रकाशक, श्री रामविलास धाम ट्रस्ट शाहपुरा (भीलवाडा)
7. रामस्नेही संत विशेषांक : ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल, 2008, संत उत्तमराम रामस्नेही
8. श्री रामस्नेही दर्शन : केशव पथिक, 2005 प्रकाशक: श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट, भीलवाडा, सिद्धार्थ ऑफसेट प्रिन्टर्स, शाहपुरा
9. स्वामी कान्हडदास जी की वाणी : श्री रामस्नेही संदेश, 2009
10. रामस्नेही भास्कर नाम प्रताप : केशव पथिक, 2009 प्रकाशक - रामनिवास धाम ट्रस्ट, भीलवाडा